International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 46-48

छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन : सहगामी पाठ्य क्रियाओं में भाग लेने के आधार पर

रेणु

शोधार्थी, पीएच०डी०, एजूकेशन सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत।

सारांश

"पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे–कूदोगे होंगे खराब" आजकल यह कहावत अपना अर्थ पूर्णतया खो चुकी है। आजकल शिक्षा का उद्देश्य मात्र पढ़ना लिखना सिखाना ही नहीं बल्कि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास से हमारा अभिप्रायः है बच्चे का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सृजनात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा मौलिक विकास। अतः छात्रों के सर्वोन्मुखी विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाएँ एक आवश्यक पहलू है। प्रस्तुत लेख में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया जिसका आधार सहगामी पाठ्य क्रियाओं में भाग लेना है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए नौंवी कक्षा के 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया। जिनमें से 75 पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले और 75 पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले हैं। अध्ययन में पाया गया कि जो विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं तथा जो भाग नहीं लेते हैं, उनके मानसिक स्वास्थ्य में कोई अंतर नहीं है। यह पाया गया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले, भाग न लेने वालों से शैक्षणिक योग्यता में आगे है।

मूल शब्दः सर्वोन्मुखी, आध्यात्मिक, सृजनात्मक, अधिगम, सहगामी क्रियाएँ।

प्रस्तावना

आजकल शिक्षा अधिगम प्रक्रिया बच्चे की प्रत्येक प्रवृत्ति का उपयोग करने का प्रयत्न कर रही है, इसलिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा उन्हें मेहनती विश्वसनीय और संसाधन युक्त बनाया जा सकता है। इन क्रियाओं द्वारा केवल बच्चे की शक्तियों का विकास ही नहीं होता वरन् सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जा सकता है। कभी समय था जब पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्य अतिरिक्त क्रियाएँ कहा जाता था इन्हें अतिरिक्त समझा जाता था और इनका संगठन समय का अपव्यय समझा जाता था। परन्तु अब इन क्रियाओं को पाठ्य सहायक क्रियाएँ कहा जाता है। अब इनका स्कूल के कार्यक्रम में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्हें विद्यार्थियों की प्रगति के सहायक माना जाता है, बाधक नहीं।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :

चन्द्रशेखर (1973–74)– जिला होशियारपुर में ग्रामीण माध्यमिक पाठशालाओं में पाठ्यसहगामी क्रियाओं की स्थिति–

इसमें 3 स्कूलों के विद्यार्थियों को लिया गया है तथा प्रश्नावली का प्रयोग कर अंत में गैर–शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने के कारण बनाए गए हैं। तत्पश्चात् निष्कर्षों के उपरान्त सुझाव दिए गए हैं कि वह विषय केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित रहा है, उस पर शहरों में भी कार्य किया जाना चाहिए। इसमें बताया गया है कि विद्यालयों में प्रातःकालीन सभा की स्थिति संतोषजनक है तथा धार्मिक त्यौहारों को सरकारी स्कूलों में अधिक मनाया जाता है।

अनीता चावला (1989–90)– उपलब्ध सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन : जिला पंचकूला के सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्ययन।

इसमें सरकारी व गैर–सरकारी प्राइमरी स्कूलों में उपलब्ध सुविधाओं के आधार पर बनाया गया है कि गैर–सरकारी प्राइमरी स्कूलों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक योग्यता अधिक होती है। इसमें पंचकूला जिले के 20 सरकारी व गैर–सरकारी स्कूलों को आधार बनाया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान शोध निम्नलिखित उद्देश्यों को लेकर किया गया–

1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने/न लेने के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का अध्ययन करना।
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने/न लेने के आधार पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने/न लेने के संदर्भ में उनके मानसिक स्वास्थ्य के अंतर को जानना।
4. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने/न लेने के संदर्भ में उनकी शैक्षणिक योग्यता के अंतर को जानना।

पूर्व कल्पनाएँ

1. जो विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं तथा जो नहीं भाग लेते हैं, उनके मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. जो विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं तथा जो नहीं भाग लेते हैं, उनकी शैक्षणिक योग्यता में कोई अन्तर नहीं पाया जायेगा।

न्यायदर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिए नौवीं कक्षा के 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिनमें से 75 पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले और 75 पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले हैं। इन विद्यार्थियों का चयन रेण्डम सैम्पेलिंग की सहायता से किया गया है।

तालिका 1: लाटरी विधि द्वारा चयन किए विद्यालय हैं

S.No.	School's Name	पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाल विद्यार्थी	पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थी
1.	G.G.S.S. School, Thanesar, Kurukshetra	25	25
2.	G.G.S. School Kurukshetra	25	25
3.	G.S.S. School Kurukshetra	25	25

शोध उपकरण

1. **शैक्षणिक उपलब्धि के परीक्षण के लिए**
   इसके लिए विद्यार्थियों के गत परीक्षा परिणामों को आधार बनाया गया।
2. **मानसिक योग्यता परीक्षण के लिए**
   Mental High Scale Inventery by cathirine wanjku Kamau-1990

परीक्षण की विश्वसनीयता

प्रयुक्त परीक्षण की विश्वसनीयता के लिए मध्यान एवं मानक विचलन विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का संगठन, विश्लेषण, व्याख्या

प्राप्तांकों के आधार पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले/न लेने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का निर्धारण –

तालिका 2

क्रमांक संख्या	तत्त्व	Participant Non Participant	उच्च स्तर	मध्यम स्तर	निम्न स्तर
1.	मानसिक	P	33	42	0
2.	स्वास्थ्य	NP	28	45	2

विपुल दण्ड चित्र–1

तालिका में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का निर्धारण उच्च, मध्यम व निम्न मानसिक स्वास्थ्य के विद्यार्थियों की संख्या को दर्शाती हैं, जिससे पता चलता है कि निम्न मानसिक, स्वास्थ्य के विद्यार्थी नाममात्र ही हैं तथा वह भी वे हैं, जो पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग नहीं लेते। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले उच्च मानसिक स्वास्थ्य के विद्यार्थी अपेक्षाकृत मध्यम मानसिक स्वास्थ्य स्तर से अधिक है। उच्च, मध्यम व निम्न मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर भी ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी मध्यम मानसिक स्तर के हैं।

शैक्षणिक प्राप्तियों का निर्धारण

शैक्षणिक प्राप्तियों को जानने के लिए विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के परीक्षा के प्राप्त अंकों को लिया गया जो कि 600 में से थे। जिन्हें तीन वर्गों उच्चत, मध्यम व निम्न में वर्गीकृत किया गया।

प्राप्ताकों के आधार पर पाठ्य सहगामी गतिविधियों में भाग लेने वाले/न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्राप्तियों का निर्धारण –

तालिका नं. 3

क्रमांक संख्या	तत्त्व	Participant Non Participant	उच्च स्तर	मध्यम स्तर	निम्न स्तर
1.	शैक्षणिक	P	36	39	0
2.	प्राप्तियां	NP	20	52	3

उपर्युक्त तालिका से ज्ञाता होता है कि जो विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं, उच्च स्तर में उनकी संख्या पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या से अधिक तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या मध्यम स्तर तथा निम्न स्तर में पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वालों से अधिक है।

पूर्वकल्पना 1

जो विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं तथा जो नहीं भाग लेते हैं, उनके मानसिक स्वास्थ्य में कोई अंतर नहीं होता। इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु विद्यार्थियों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले और भाग न लेने वाले दो समूहों में वर्गीकृत किया गया और (TMHS-Section four by catherice waujku Kamau-1990) टैस्ट का प्रयोग कर आँकड़ों को प्राप्त किया गया फिर सांख्यिकी विधियों का प्रयोग करके उनका विश्लेषण किया गया। जो निम्न तालिका में दर्शाया गया–

तालिका नं. 4

क्रमांक संख्या	तत्व	प्राप्त आंकड़ों का औसत		प्रमाणिक विचलन	$S.E_D$	T
		NP	P	S.D		
1.	मानसिक	मानसिक	30-066	7-515	1-24	0-53

टी का मान .05 सार्थकता स्तर पर 2.58 है। तालिका से प्राप्त मान 0.53 है जो कि 1.96 से कम है। अतः यह सार्थक नहीं है। इसलिए पूर्व कल्पना–1 स्वीकार्य है। अर्थात् दोनों समूहों का मानसिक स्वास्थ्य समान है।

पूर्व कल्पना–2

पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वालों की शैक्षणिक योग्यता में कोई अंतर नहीं होगा। परीक्षण के लिए विद्यार्थियों को दो भागों में बांटा गया है। तत्पश्चात् उनके पिछले

परीक्षा परिणामों को लिया गया जो कि 600 अंकों में से था। प्राप्त अंकों के आधार पर सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया व उनका विश्लेषण किया गया जिससे तालिका में वर्णित प्राप्त हुई।

तालिका नं. 5

क्रमांकसंख्या	तत्व	प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग		प्रमाणिक विचलन		$S.E_D$	T
		P	NP	P	NP	S.D	
1.	शैक्षणिक	419-41	392-86	77-126	78-506	12-70	2-090

*Significant at .05 level of Significance

t का मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 है तथा ज का मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.58 है। तालिका में वर्णित ज का मान 2.090 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक है अतः यह हमारी पूर्व कल्पना अस्वीकृत होती है। परन्तु ज का मान प्राप्त मान 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः भाग लेने वाले पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों से शैक्षणिक प्राप्तियों में आगे हैं।

निष्कर्ष

प्राप्त सूचनाओं के आधार पर नम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये–

1. जो विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं तथा जो नहीं भाग लेते, उनके मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं है।
2. जो विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं तथा जो नहीं भाग लेते हैं उनकी शैक्षणिक योग्यता में 0.01 सार्थकता स्तर पर कोई अन्तर नहीं होता, परन्तु 0.05 सार्थकता स्तर पर अंतर होता है।
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले, भाग न लेने वालों से शैक्षणिक योग्यता में आगे है।

सुझाव

1. एक या अधिक चरों के जोड़ के साथ वर्तमान अध्ययन को दोहराया जा सकता है जैसे स्मरण शक्ति को तेज करना, मानसिक योग्यता, नैतिक मूल्य आदि।
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने/न लेने वाले लड़के तथा लड़कियों की रुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने/न लेने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक, व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन संभव है।

संदर्भ सूची ग्रन्थ

1. डॉ. शर्मा, आर.ए., शिक्षा ओर मनोविज्ञान में प्रारम्भिक सांख्यिकीय (2003) आर.लाल, बुक डिपो, मेरठ।
2. सुन्दरलाल मेहरा (1955), पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति विद्यार्थियों का दृष्टिकोण।
3. चन्द्रशेखर (1973–74), जिला होशियारपुर में ग्रामीण माध्यमिक पाठशालाओं में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की स्थिति।
4. अनीता चावला (1989–90), उपलब्ध सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन : जिला पंचकुला के सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्ययन।
5. आर.एन. पुरी (1969), उड़ीसा के माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं से संबंधित मूल्यांकन तथा उनका विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास से संबंध।